साहित्य संहिता
Available at http://sahityasamhita.org/

ISSN: 2454- 2695
Volume 01 Issue 02
March 2015

नई ताजगी

नवीन कुमार 'आर्यन'

यही नही जिन्दगी

कि काम करते-करते सो गए

और जग कर करने लगे काम

जिन्दगी यह कि

हम सोचे समझे

क्या सही क्या गलत

क्या दे रहा हमे जगत

जगत को हम क्या दे रहे

हम क्या कर रहे

इससे संसार होगा कितना सुन्दर

कितना मनोहर

इसका भी हम रखे ख्याल हर बार